International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 15-03-2023, Accepted: 30-03-2023, Published: 15-04-2023
Volume 5, Issue 2, 2023, Page No. 1-3

मधुकर गौड़ का गीत काव्य

डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल
पी.एच.डी., एसोसिएट प्रोफेसर अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद कॉलेज परेल, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
समकालीन गीतकार मधुकर गौड़ के गीतों की तरलता जीवन के गझिन संवेदना से जमीनी धरातल पर जोड़ती है। गीतकार का भाव बिम्ब भावक के चारो तरफ एक विशेष तरह की खुशबू विस्तरित करता है। जीवन की केन्द्रीय लय तो जन्म से ही गीतकार मधुकर के श्वास–प्रश्वास में व्याप्त है। जैसे–जैसे जीवन के सौन्दर्यमूल्य विकसित हुए मन तरंगायित होने लगा काव्य की सरिता मनोजगत में छलछ्लाने लगी, स्मृतियों के आईने में उतरती हुई रचनाधर्मिता, अनुभवों की थाती को आम आदमी तक ले जाने में सफल हुए है। किसी तरह की धार्मिक सामाजिक संकीर्णता से मुक्त रहते हुए गीतकार डेमोक्रेट की भूमिका में सुकून महसूस करता है। करो या मरो तथा अंग्रेजों भारत छोड़ो जैसे स्वतंत्र भारत की संकल्पना के दौर में जन्में मधुकर जी की रगों में मुक्ति की धारा प्रवाहित है।

मूल शब्दः गौड़ के गीतों की तरलता, परंपरा के उन्नतिशील, नैराश्य की भावना

मधुकर गौड़ समकालीन गीत परंपरा के उन्नतिशील सक्रिय समर्थ गीतकार, सृजनशील, संभावनाओं से लबरेज मधुर प्रकृति के ओजस्वी, अति संवेदनशील गीतकार है। स्मृतियों के आईने में उतारते हुए जीवन के जिवंत क्षणों से संवाद स्थापित करते हुए मधुकर जी बेबाक शब्दों में मन की बात कह जाते है–

एक आदत सी है मुझमें बांकपन की
टूट जाता हूँ, मगर झुकता नहीं हूँ
स्नेहवश आंको अगर, बिन मोल ले लो
किन्तु सिक्को के लिए,
बिकता नहीं हूँ। 1 गीताम्बरी दृमधुकर गौड़ पृष्ठ–37

मधुकर जी के गीत की संवेदना वृत्ताकार होकर शब्द बिम्ब और अर्थलय की परिधियों को पार कर जीवन के केन्द्रीय लय तक पहुँचती है, जिसे हम रसानुभूति या रस का साधारणीकरण कहते हैं। जीवन रस शिराओं में संचरित होने लगता है पाठक या भावक, स्रोता रससिक्त होकर सुधबुध खो बैठता है। जीवन की केन्द्रीय लय तो जन्म से ही गीतकार मधुकर के श्वास–प्रश्वास में व्याप्त है। जैसे–जैसे जीवन के सौन्दर्यमूल्य विकसित हुए मन तरंगायित होने लगा काव्य की सरिता मनोजगत में छलछ्लाने लगी, स्मृतियों के आईने में उतरती हुई रचनाधर्मिता, अनुभवों की थाती को कलम की रोशनाई से 'गांव भर में धुंआ' में सहेजने लगता है–

"मैं कभी सागर,
नदी, नाविक रहा
पर जिन्दगी मानी नहीं
मेरा कहा"
बादलों से दोस्ती थी
दुश्मनी थी धूप से
मन अगर सच्चा मिला तो
क्या गिला था रूप से।। 2 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–65

आधुनिक गतिशील जीवन,तथ्यात्मकता का अभाव, संबंधों की सूखती ऊष्मा के बीच मृगतृष्णा सरीखी जिन्दगीं में स्मृतियों की थाती व वर्तमान से संवाद के बीच जीवन की तपन और तथ्यहीन स्मृति कितनी तथ्यात्मक है। कविता का सचित्र अंकन हमें बरबस विचार करने के लिए अपने पास रोक लेता है।जीवन के बीते हुए क्षण जीवन से संवाद करने लगते है। सुख–दुःख, की आँख मिचौली में क्षणांश वातावरण जिवंत हो उठता है। मन–प्राण बोल उठते है, गीत की स्रोतस्वनी फूट पड़ती है–

"कहीं अंकित करें हमको
सृजन के हंस बोलेंगे
मिलेंगे बाँह फैलाकर
ह्रदय–मन–प्राण खोलेंगे"।। 3 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ– 73

मधुकर गौड़ के कवि एवं गीतकार ने आज़ादी के बाद भारतीयों में आई नैराश्य की भावना को अपनी अंतर्वस्तु के रूप में आत्मसात करने और उसे अभिव्यक्त करने के लिए मध्यवर्गीय पारिवारिक बिखराव, टूटन, असंतोष और बेमानी रिश्तों की घुटन को अपना विषय बनाया है और भ्रष्ट शासनतंत्र द्वारा पैदा की गई अराजकता और शोषण के युगीन संदर्भो को भी गीतों में व्यक्त करने की सक्षम भूमिका निभाई है।मधुकर गौड़ की समूची कविता का कार्यव्यापार अवलोकन और अनुभूति पर टिका है, गीतकार के सरोकार मुखर है–

"बिजलियां चमके, उठे तूफान या बरसात आये,
ध्येय पथ में अनेकों बार छल की रात आये;
याद यह रखना, हमेशा साथियों–
'देश का सम्मान' घायल हो न जाये।। "4 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–56

महानगरीय भागमभाग, अतिभौतिकता एवं सूखती संवेदनाओं के बीच गीतकार अपनी देशज भंगिमा कविता में संवेदना की आधुनिकी जितनी गतिशील और सत्वर मधुकर जी के यहां दिखाई देती है। उस मोड़ पर पहुंच कर पाठक, श्रोता और भावक का कवि–मन भी उस अलक्षित अर्थगौरव के सम्मुख जैसे ठिठक उठता है. उस अनकहे, अनुभूत की खोज ही मधुकर गौड़ की कविता की वह केंद्रीय धुरी है कुछ ऐसे सद्यःस्नात बिम्ब उनकी कविता के हर कोने–अँतरे में सजे–धजे हुए मिलेंगे कि हम उनकी कौंध से बरबस मुग्ध हो उठते हैं. उनकी कविता अचरज से इस दुनिया को निहारती है, इसकी हर चहल–पहल को अपने अंतःकरण में सहेजती चलती है–

"चलो कुछ देर हम देशी हवा खायें
उड़े सब साथ,
चिड़ियों की तरह गायें।
करें हम तितलियों से गुफ्तगू
मौसम के बारे में,
कभी शबनम, कभी कलियाँ
कभी हम फूल बन जायें।
चलो कुछ देर हम देशी हवा खायें।।" 5 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–26

मधुकर जी की कविताएं अतीत और वर्तमान की स्मृतियों में आवाजाही करने वाली कविताएं हैं. कविता इसी विश्वास, प्रतिरोध,बेचैनी और तद्भवता की कविता है, ये कविताएं देशज और नागर सभ्यता के बीच एक पुल बनाती हैं।गौड़ जी की कविता किसी शासन या सत्ता पर सीधे नहीं, वह उसके अंतः करण पर चोट करती है. वह सत्ता और लोकतंत्र के विचलनों से व्यथित तो होती है पर उम्मीद नहीं छोड़ती कविता जहां अपनी अनूठी संरचना, अनूठे बिम्ब, कसे हुए छंद और अपने गठीले विन्यास के लिए जानी जाती है वहीं वह बिना किसी निर्धारित एजेंडे के लोकचित्त में भी उतनी ही आत्मीयता से प्रवेश करती है. वह अपने समय की तलाश को' मिली न मुझको मानवता 'कविता में व्यक्त करते है,गीतकार का सर्जक प्रेय है–

"सब कुछ मिला शहर–शहर में,
मिली न मुझको मानवता।
अपराधों शिविर लगे थे,
जन मन में थी कायरता।।
सहमें–सहमें से गुलाब थे,
डरी डरी सारी कलियाँ,
खून की सर पर चादर ओढ़े
चुप्पी साधे थी गालियाँ
ऐसा शोर मचा था जिसको
समझ नहीं पाता था मं,।।" 6 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–42

गीतकार अपने समय की बारीक से बारीक आवाज को सुनता है, पीड़ा, अवसाद और निराशा की हल्की से हल्की खरोंच तथा उम्मीद की पुलक को अपनी कविता में दर्ज करता है। ''जन मानस और मुनिमानस का संघर्ष आज का नहीं है। मुनि ने सदा यह दावा किया है कि उनकी रचना में शाश्वत प्रकट होता है, और उसने जहाँ तक हो सका है जन और उसकी कृति की अवहेलना की है, उसे हेय बताया है।. शताब्दियों पूर्व वेदों की रचना हुई। उन्हें जिस वर्ग ने निर्माण किया, उसी वर्ग के अन्य व्यक्तियों उसे अलौकिक और अपौरुषेय बताया। ऐसा उनका अपना आतंक और प्रभाव जमाने के लिए किया जाता रहा।यह आधुनिक काल तक न रह सका। लौकिक काव्य की उद्भावना हुई और आदि कवि बाल्मीकि ने रामायण रच डाली, वह उनकी रचना मुनि–मानस का प्रतिफलन न था, नहीं तो उसे लौकिक न कहा जाता। किन्तु मुनि–मानस एक और धाँधली करता रहा है। जन–मन की सृष्टियों को वह अपनी बनाता रहा है। बाल्मीकि और उनके वर्ग की रचनाएँ मुनि–मानस की वस्तुएँ हो गईं। जन का जो सुन्दर था उसे अपने लिया गया। वह परिमार्जन और संस्कार करना जानता है।लोक मानस से सामग्री लेकर उन पर केवल कलई मुनि–मानस कर देता है। मुनि को विद्वान कहा जा सकता है, तत्वदर्शी कहा जा सकता है, किन्तु उसके पास जो कला है वह अपनी नहीं।कला के लिए उर्वर भूमि की आवश्यकता होती है। स्वतंत्रता और मुक्ति ही उर्वरता है।'' लोक मानस के चितेरे लोक मानव मधुकर गौड़ के पास यही उर्वर भूमि है, यही कारण है कि जीवन की हर स्थिति को अभिव्यक्त करने के लिए उसके पास सामग्री है। लोक मानव ने शोषण को स्वयं झेला है इसलिए शोषित की पीड़ा जिस ढँग से वह व्यक्त करते है वैसा कोई और नहीं। जब किसी ऐसे प्रसंग के लिए लिखे जा रहे नवगीत में लोकगीत या लोकभाषा की उपस्थिति होती है तो उस गीत या नवगीत की संप्रेषणीयता और बढ़ जाती है, क्योंकि उन संदर्भों का विश्लेषण श्रोता के अन्तस में बैठे हुए लोकगीत या लोकगाथा या किसी लोक संदर्भ के सहारे पल भर में साधारणीकरण हो जाता है और भावक उसका भरपूर आनन्द लेने में सक्षम हो जाता है।

मधुकर जी की समूची कविता भौतिकता के विरुद्ध खड़ी है। कविया गीतकार महनगरीय भीड़ में भी मानवीय मर्म को छूने वाले उन स्थलों की तलाश करता है। जहां अभी संवेदना की नमी बाकी है उनकी समूची काव्य संरचना चाहे जितनी कलात्मक और नए तौर तरीकों वाली हो, उसके भीतर आम आदमी की संवेदना से जुड़ने की एक अनायास कोशिश दिखती है। भौतिक चकाचौध माया नागरी की उलझनों के बीच गीतकार को बार–बार छूटा हुआ गांव–कस्बा एवं सरोकार याद आते है–

"उनको बाँटो विश्वास नया
है थकन भरी जिन पावों में
सर पर रख कर जो धूप चले
उनको आने दो छाँवों में"–7 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–161

संवेदना की आधुनिकी के बीच यह कवि भूल नहीं जाता कि वह भारत का कवि हैपकिसानों, ग्रामीणजन के सुख–दुःख के बीच पला–पुसा कवि है। जिसकी कविता में छोटे कस्बों, गांवों,न दियों, लोगों, संगी–साथियों के जीवन की लय हास–उल्लास समाहित हैद्यमधुकर जी की कविता में महानगरीय भावबोध के साथ गांव में रचे–पगे उनके कवि–मन का एक गहरा किन्तु झीना–सा संघर्ष चलता रहता है और हर बार उनकी कविता इस संघर्ष में अपनी गरबीली गरीबी की कामना के साथ स्वाभिमान से सिर उठा कर चलती हुई 'हल की बेटिया 'मालूम होती है पर लोकतंत्र की बेरोकटोक हवा, पानी और धूप के बावजूद जो सांस्कृतिक क्षरण हो रहा हैद्यजो स्मृति–लोप हो रहा है,उनकी समूची कविता इस प्रवृति के सम्मुख चुनौती और ढाल बन कर सामने आती है।

हमने देखी रौशनी में गंध है
सूर्य का लावा बरफ में बंद है
इस लिए सब खेतियाँ
इसलिए बदनाम हल की बेटियाँ। गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–467

सामाजिक बंधन की बेड़ी में कसें, छटपटाते, घुटते, विषाक्त वातावरण के बीच जीवन जीना मुश्किल होता जा रहा है।सजग रचनाकार भाव एवं चित्रों की पच्चीकारी करते हुए काव्यशास्त्रीय मानकों को स्थापित करता चलता है मधुकर के सर्जक के पास सृजन के लिए कितना सब कुछ है। क्षण–प्रतिक्षण के जिवंत पल, अनुभवों का व्यापक संसार, मनोभावों को अभिव्यक्त करने की पुरजोर लालसा और न जाने कितना कुछ है जो जीवंत हो उठना चाहता है। कवि, गीतकार मन के भावों साथ एकसार हो जाना चाहता है।मन की बेचैनी शब्दों के आईने में ढलने लगती है कागज़ और कलम का अटूट रिश्ता संबंध लिखने लगता है और लिखने लगता है जीवनद्य संवेदना क्रमशः शब्दों पर ढरकने लगती है, जाने–अनजाने भावों का आवेग कविता के साँचे में अटूट रिश्ता बना जाता है। सृजन की प्रक्रिया मुखर हो उठती है।

मधुकर गौड़ के यहाँ 'कला, कला के लिए नहीं, बल्कि कला जीवन के लिए है।' इसी कारण हिंदी कविता की गीत परंपरा के

महान कवि कबीर, तुलसी, सूर मीरा, रहीम, रसखान आज भी प्रासंगिक हैं और जन–जन में लोकप्रिय हैं।ये हिंदी कविता के ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना के भी सक्षम वाहक हैं। इसी समाजोन्मुख दृष्टिकोण को गीतकार ने रचना प्रक्रिया का आधार बनाया हैद्यजो मानवीय संवेदना का जागरूक चितेरा ही नहीं बल्कि संघर्षशील ज़िंदगी का सच्चा हमसफ़र भी है। गीत को संरक्षण प्रदान करने के साथ आधुनिक युगबोध और शिल्प के साँचे में ढालकर उसको नवीन और मोहक रूप आकार प्रदान करने का काम किया है। गीतकार आम आदमी के दुख–दर्द में सिर्फ़ गुनगुनाता ही नहीं, बल्कि ज़िंदगी की लड़ाई में हमदर्द की तरह ऊर्जा भी प्रदान करता है और रास्ता भी बताता है। मधुकर गौड़ की कविता सचमुच शब्दों का श्रृंगार हैप्उसके अर्थ नए हैं, उसकी प्रतीतियां नई हैंद्यउनकी कविता हमेशा पुनर्नवा और तरोताज़ा दिखती है। उनकी कविताओं में समूचे विश्व की वेदना सुनाई पड़ती है। किसी मामूली से कथ्य व किस्सागोई के शिल्प में होती हुई उनकी कविताएं उस जगह पहुंच कर विराम लेती हैं, जहां पहुंच कर मनुष्य की अंतश्चेतना के बारीक से बारीक तार झंकृत हो उठते हैं। उनकी कविता की बुनावट इतनी नई है जितनी हमारी आधुनिकता और उतनी पुरानी है जितनी हमारी स्मृति–परंपरा, शब्दों के बीच साहस की तलाश करने वाले मधुकर गौड़ की कविता पीड़ा, बदहाली और विश्वसनीयता के संकट से जूझते हुए दौर में भी आखिरकार यही ऐलान करती है कि मौसम चाहे जितना खराब हो, उम्मीद नहीं छोड़ती कविताएँ–

"टूटती हैं जब उम्मीदें,तो फिर सजाता हूँ,
जिंदगी को इस तरह आसां बनाता हूँ।।"8 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–596

"साफ लफ्जों में सदा कहने की आदत है मुझे,
आग हूँ मैं धूप को सहने की आदत है मुझे।।
आँधियाँ मेरे बिना कैसे चलेगी दोस्तों
मैं हवा हूँ हर घडी बहने की आदत है मुझे।।" 9 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–595

यादों के झरोखें में चलकदमी, करती यादें अपने साथ बहुत कुछ लेकर आती है। जीवन की विविध रंगी तस्वीर, इन्द्रधनुषी छटा एक बारगी जगमगा उठती है। अल्हड जवानी, हँसता खेलता बचपन पहला प्यार, दोस्ती की मजबूत जमीन, सम्बन्धों की बुलंद इमारत, अभिलाषाओं का पहाड़ अर्थात सब कुछ जीवन की अमूल्य पूँजी जीवन के मरुस्थल में जिवंत हो उठती है।सारा परिदृश्य क्षणांश के लिए हरीतिमा से लहलहा उठता है। जीवन के रेत में नमी का अनुभव होने लगता है।

"वह हँसी, आँसू, रूठना, मनाना
जो जिए क्षणों को बनाते बिगाड़ते थे,
किसी अध–भूले अतीत में,
फिर से जैसे जी उठे। यादें।।" 10 गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–177

अनंत जिज्ञासा की मरीचिका में भटकते हुए अनुभब की थाती से सम्पन्न गीतकार मधुकर गौड़ की कलम जीवन लिखती चलती है। जीवन के खुरदरे, दाँतेदार समय के साथ संवाद शब्दांकन है।'आचरण बादल दूँ' से 'रोशनी का अपहरण' तक के लम्बे सफर का साक्षी है 'गीताम्बरी', आशा और निराशा के बीच 'समय के धनुष '1976 से' चुप ना रहो '2015 तक मृगतृष्णा और जीवन का आपसी मेलजोल, धमाचौकड़ी अंततः खीच ले जाती है अनंत जिज्ञासा की ओर इति से अथ तक।

मधुकर जी को पढ़ते हुए यह विस्मृत कर पाना असंभव है कि हम एक भारतीय कविता की वीथियों से गुजर रहे हैं. इसकी गढ़न या साँचे में जो अनूठापन और नवता है, वह भारतीय कविता के स्थानिक चरित्र की देन है। भारतीय मनुष्य के स्वभाव में किस्सागोई, गपशप और बातचीत का जो अंदाजेबयाँ है, वह बचपन की यादें, गाँव और भारतीय जनजीवन से ही आया है। मधुकर गौड़ के गीतों में प्रवेश करते समय स्पष्ट पता लगने लगता है कि हम अचानक कविता की एक भिन्न जलवायु में आ गए हैं, जहाँ महानगर की इमारतों के बीच गवई गंध की खुशबू विस्तरित होती है पकिसी भी तरह की धार्मिक सामाजिक संकीर्णता से मुक्त रहते हुए गीतकार डेमोक्रेट की भूमिका में सुकून महसूस करता है। करो या मरो तथा अंग्रेजों भारत छोड़ो जैसे स्वतंत्र भारत की संकल्पना के दौर में जन्में मधुकर जी की रगों में मुक्ति की धारा प्रवाहित है। गुलामी से आजादी की ओर स्वतंत्र भारत। मधुकर जी ने राष्ट्र की पराधीनता के दिन देखे, विदेशी सत्ता के खिलाफ जन आक्रोश देखे,शासनतंत्रका दमन देखा तथा आजादी के बाद टूटते स्वप्न,चीन एवं पाकिस्तान के साथ दो युद्धों के साक्षी रहे आंतरिक कारणों से आपातकाल की घोषणा अराजकता अब अच्छे दिनों के नाम पर दुःखी भारत देख रहे है। बाजार मुक्त भारत और बाजार–आच्छादित भारत जिसका बहुप्रचारित उदारतावादी चेहरा, व्यवस्था और संस्कृति पर खतरा जैसे सामान्यजन को मुँह चिढ़ाता हुआ–सा दिखता है।

"गजब हो गया
शहर की बातें
गाँव चली आई
दूर खड़ी परछाई ओढें
अपनी ही परछाई "। 11 'गाँव चली आई' गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–423

मधुकर जी की कविता महानगर, कस्बे, गॉव, अतीत, वर्तमान, बाजार और वैश्विकता को अपनी इसी ठेठ देशज और भारतीय मति से देखती और एक कवि की प्रतिश्रुति और भाषायी कौशल के साथ उसे कविता एवं गीतों में उपार्जित और व्यवहृत करती आई हैप्मधुकर की काव्य स्रोतस्विनी गीत परम्परा की रससिक्त धरा को प्रसाद–पंत, महादेवी,वीरेन्द्र मिश्र, गोपालदास नीरज, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', बच्चन, नेपाली शंभुनाथ सिंह और ठाकुर प्रसाद सिंह से सिंचित जमीन से जोड़ती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–37 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
2. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–65 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
3. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–73 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
4. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–56 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
5. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–26 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
6. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–42 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
7. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–161 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
8. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–467 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
9. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–595 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
10. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–177 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016
11. गीताम्बरी–मधुकर गौड़ पृष्ठ–423 मारुधारा प्रकाशन मुंबई संस्करण 2016